अनुक्रमणिका

(1) राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत....... 4
- राजस्थान के प्रमुख अभिलेख....... 4
- राजस्थान के सिक्के एवं टकसालें....... 17

(2) राजस्थान का प्रागैतिहासिक एवं आद्य ऐतिहासिक युग....... 21

(3) राजस्थान इतिहास के साहित्यिक स्रोत एवं राजस्थानी भाषा , बोली ,लिपि....... 34

(4) प्राचीन राजस्थान /जनपद काल....... 51

(5) राजस्थान का राजपूत युग....... 56
- मेवाड़ का इतिहास (गुहिल/सिसोदिया वंश)....... 59
- मारवाड़ का राठौड़ राजवंश (जोधपुर एवं बीकानेर)....... 82
- राजस्थान में गुर्जर-प्रतिहार वंश....... 92
- राजस्थान में परमार वंश....... 94
- राजस्थान के चौहान वंश एवं उनकी शाखाएँ....... 96
- आमेर–जयपुर का कच्छवाहा वंश....... 104
- जैसलमेर का भाटी राजवंश....... 115
- करौली राज्य का यादव राजवंश....... 117
- भरतपुर/धौलपुर का जाट राजवंश....... 119
- राजस्थान की एकमात्र मुस्लिम रियासत : टोंक....... 123

(6) मध्यकालीन राजस्थान की राजव्यवस्था/सामंतवाद....... 124

(7) 1857 की क्रांति एवं ब्रिटिश हस्तक्षेप....... 133
- राजस्थान में 1857 की क्रांति....... 133
- ब्रिटिश हस्तक्षेप....... 139

(8) राजस्थान के प्रमुख किसान आंदोलन एवं जनजाति आंदोलन....... 144

(9) राजस्थान का एकीकरण , प्रजामंडल आंदोलन एवं प्रमुख समाचार पत्र....... 153
- राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण....... 153
- राजस्थान में प्रजामण्डल आन्दोलन....... 158
- राजस्थान में समाचार-पत्रों का इतिहास....... 168

(10) राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्त्व....... 172

(11) राजस्थान की चित्रकला, स्थापत्य एवं शिल्प कला....... 185
- राजस्थान की प्रमुख चित्रशैलियाँ....... 185
- राजस्थान की स्थापत्य एवं वास्तुकला....... 198

(12) राजस्थान की हस्तशिल्प (कपड़ा, मूर्ति, प्रिंट)....... 225

(13) राजस्थान का संगीत , लोक गीत , वाद्य एवं नृत्य....... 232
- राजस्थान के लोकगीत एवं लोकसंगीत....... 232
- राजस्थान में शास्त्रीय संगीत : घराने एवं गायन शैलियाँ....... 235
- राजस्थान के प्रमुख लोक वाद्य यंत्र....... 237
- राजस्थान के प्रमुख लोक नृत्य....... 246

(14) राजस्थान के प्रमुख लोक नाट्य.......252
(15) राजस्थान के प्रमुख संत , संप्रदाय, लोकदेवता , लोकदेवियाँ.......258
- राजस्थान के प्रमुख संत एवं संप्रदाय.......258
- राजस्थान के प्रमुख लोकदेवता.......268
- राजस्थान की प्रमुख लोकदेवियाँ.......273

(16) रीति-रिवाज एवं परंपराएँ (मेले , त्योंहार, विवाह, मृत्यु, जन्म संस्कार, लोक मान्यता, शब्दावली)...279
(17) आभूषण और वेशभूषा (स्त्री वस्त्र , पुरुष वस्त्र , आदिवासी वस्त्र).......293

Scan this QR code to attempt topicwise PYQ

स्व-मूल्यांकन एवं अध्ययन प्रगति संकेतक (Self-Assessment & Progress Tracker)

उद्देश्य - इस प्रश्न बैंक का उद्देश्य केवल प्रश्नों का अभ्यास कराना नहीं है, बल्कि अभ्यर्थी को अपनी **वास्तविक तैयारी की स्थिति का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन** करने में सक्षम बनाना है। प्रत्येक प्रश्न के साथ दिया गया **स्व-मूल्यांकन संकेतक** अभ्यर्थी को यह पहचानने में सहायता करेगा कि कौन-से प्रश्न पूर्णतया तैयार हैं, किन प्रश्नों में पुनरावृत्ति की आवश्यकता है और किन्हें पुनः अध्ययन करने की आवश्यकता है।

❖ **स्व-मूल्यांकन संकेतक -** [□ Learn | □ Review | □ Mastered]
- ➢ □ Learn - इस प्रश्न का उत्तर ज्ञात नहीं है या अवधारणा स्पष्ट नहीं है।
- ➢ □ Review - इस प्रश्न का उत्तर ज्ञात है, परन्तु पूर्ण आत्मविश्वास नहीं है।
- ➢ □ Mastered - इस प्रश्न का उत्तर आत्मविश्वास पूर्वक दिया जा सकता है।

❖ **उदाहरण:-**
- ➢ **Learn (L) स्तर :-** इस प्रश्न का उत्तर ज्ञात नहीं है या अवधारणा स्पष्ट नहीं है, इसलिए केवल Learn (L) पर ✔।
  - ■ राजस्थान का सबसे प्राचीन ताम्रपत्र है ____________, जो किष्किंधा क्षेत्र से संबंधित है ?**[☑ L | □ R | □ M]**
- ➢ **Review (L + R) स्तर :-** इस प्रश्न का उत्तर ज्ञात है, परन्तु पूर्ण आत्मविश्वास नहीं है और पुनरावृत्ति की आवश्यकता है, इसलिए (L) एवं (R) पर ✔ ।
  - ■ राजस्थान में सर्वप्रथम लेखित सिक्के कहां पाए गए थे? **[☑ L | ☑ R | □ M]**
- ➢ **Mastered (L + R + M) स्तर :-** इस प्रश्न का उत्तर पूर्णतः स्पष्ट है तथा आत्मविश्वासपूर्वक दिया जा सकता है, इसलिए **(L)**, **(R)** एवं **(M)** तीनों पर ✔।
  - ■ राजस्थान में सबसे प्राचीन वैष्णव सम्प्रदाय से संबंधित शिलालेख कौन सा है? **[☑ L | ☑ R | ☑ M]**

नोट:- प्रश्न की तैयारी जितनी पूर्ण हो, उतने संकेतकों पर ✔ अंकित करें। प्रश्न पूर्णतः तैयार होने पर तीनों संकेतकों पर ✔ लगाएँ। L, R एवं M तैयारी की प्रगति के संकेतक हैं; अतः आपकी तैयारी के अनुसार किसी प्रश्न पर प्रथम प्रयास में ही एक, दो या तीनों संकेतकों पर ✔ लगाया जा सकता है।

महत्त्वपूर्ण नोट:- इस इतिहास प्रश्न बैंक का निर्माण करते समय सामग्री की गुणवत्ता, प्रासंगिकता एवं उपयोगिता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। इसी उद्देश्य से किसी भी विषय का विस्तृत विवरण अथवा अतिरिक्त व्याख्या केवल उसके प्रथम उल्लेख पर ही दी गई है। बाद के अध्यायों अथवा प्रश्नों में उसी विषय की पुनरावृत्ति होने पर केवल परीक्षा की दृष्टि से आवश्यक तथ्य ही शामिल किए गए हैं। यह व्यवस्था पुस्तक को अनावश्यक दोहराव से मुक्त, अधिक व्यवस्थित तथा त्वरित अध्ययन एवं प्रभावी पुनरावृत्ति के लिए उपयोगी बनाती है।

"इतिहास अनंत है, लेकिन प्रभावी अध्ययन सदैव एक निश्चित सीमा और स्पष्ट दिशा के साथ ही प्रारम्भ होता है।"

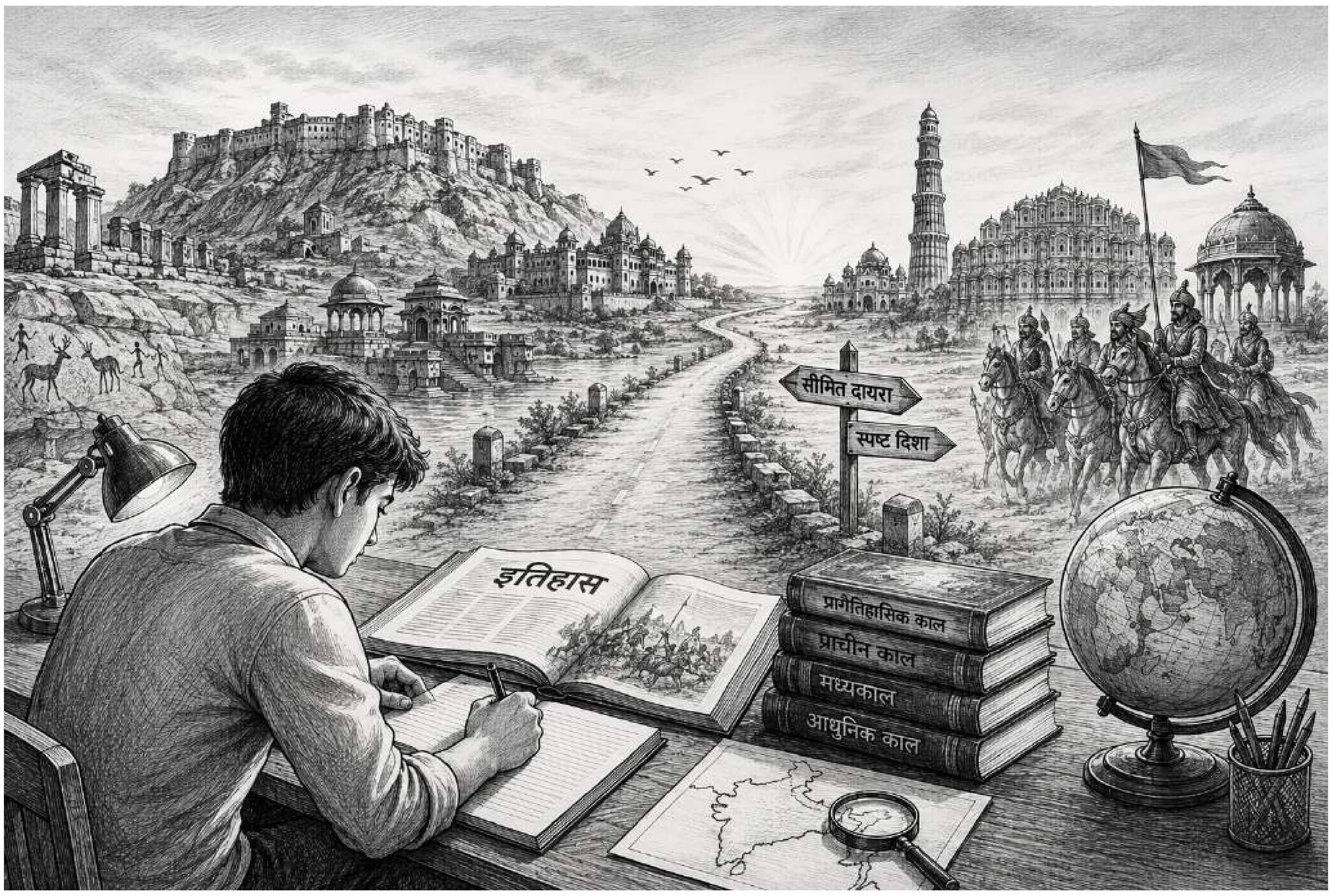

(2) राजस्थान का प्रागैतिहासिक एवं आद्य ऐतिहासिक युग

राजस्थान का इतिहास

काल	समय
प्रागैतिहासिक काल	10,000 ईपू तक
आद्यैतिहासिक काल	3000-1500 ईपू
वैदिक एवं महाजनपद काल	1500 - 600 ईपू
प्रारंभिक एतिहासिक काल	600 ईपू से 700 ई. तक
प्रारंभिक मध्यकाल	700-1200 ई.
मध्यकाल	1200-1700 ई.
आधुनिक काल	1700-1956 ई.

राजस्थान के पुरातात्त्विक स्थल

- ❖ **परिभाषा -** पुरातात्त्विक स्थल उसे कहा जाता हैं जिस स्थल से अतीत में मानव निवास या मानव की भौतिक गतिविधियों के साक्ष्य प्राप्त हुये हो।
- ❖ **मानव विकास की प्रक्रिया** = शिकारी → पशुपालक → कृषि
- ❖ **मानव द्वारा धातु का प्रयोग** = पाषाण → ताम्र → कांस्य → लौह

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही उत्तर चुनिए ? [□ L | □ R | □ M]
   (A) ताम्र पाषाणिक सभ्यताओं के लोग पक्की ईंटों का प्रयोग करते थे।
   (B) गणेश्वर स्थल को ताम्र संस्कृतियों की जननी कहा जाता है एवं यहाँ से दोहरी पेचदार सीरेवाली ताम्र पिन प्राप्त हुई है।
   (C) आहड़ सभ्यता को बनास संस्कृति भी कहते हैं और यहाँ से बैल की मृणमूर्ति (बनासियन बुल) प्राप्त हुई है।
   (D) रंग महल से कृष्ण लीला के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं और यहाँ से गुप्तकालीन मृणमूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।
   (E) ओझियाना स्थल नदी किनारे स्थित है और यहाँ से सफेद रंग का अंकन लिए बैल और गाय की मृण मूर्तियाँ मिली हैं।
   ऊपर दिये गए कथनों में से कौन सा/से सत्य है/हैं?
   (1) केवल (B), (C) और (D)
   (2) केवल (A), (B) और (C)
   (3) केवल (B) और (E)
   (4) केवल (C), (D) और (E)
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (1)

व्याख्या -

(A)	✘	ताम्र पाषाणिक सभ्यताओं में पक्की ईंटों का प्रयोग नहीं होता था। मकानों के निर्माण में पत्थर, कच्ची अथवा धूप में सुखाई गई ईंटों का उपयोग किया जाता था।
(B)	✔	गणेश्वर को "ताम्र संस्कृतियों की जननी" कहा जाता है तथा यहाँ से दोहरी पेचदार ताम्र पिन प्राप्त हुई है।
(C)	✔	आहड़ सभ्यता को बनास संस्कृति भी कहा जाता है तथा यहाँ से बनासियन बुल (बैल की मृणमूर्ति) प्राप्त हुई है।
(D)	✔	रंगमहल से कृष्णलीला के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं तथा यहाँ से गुप्तकालीन मृणमूर्तियाँ भी मिली हैं।
(E)	✘	ओझियाना से सफेद अंकन वाली बैल एवं गाय की मृणमूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, लेकिन यह स्थल नदी किनारे नहीं बल्कि पहाड़ी की ढलान पर स्थित है।

अतिरिक्त जानकारी

ताम्र पाषाण काल (Chalcolithic Age) –

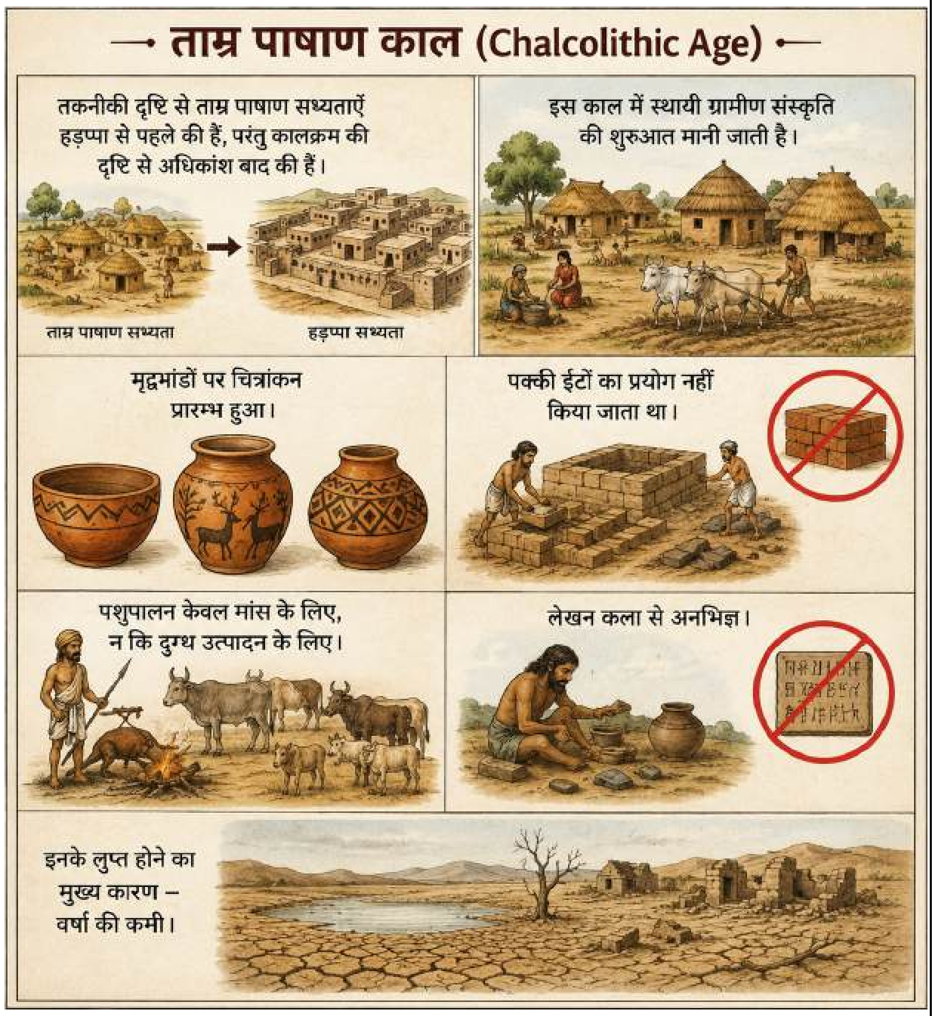

(3) राजस्थान इतिहास के साहित्यिक स्रोत एवं राजस्थानी भाषा , बोली ,लिपि

राजस्थानी साहित्य

• राजस्थानी साहित्य की विशेषता यह है कि इसमें स्थानीय बोली-बानी का सुंदर उपयोग किया गया है। इस साहित्य की भाषा में विभिन्न राजस्थानी उपभाषाओं का समावेश होता है जैसे मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढूंढाड़ी, हाड़ौती, और बागड़ी।

भक्ति साहित्य	लोक साहित्य	जैन साहित्य	चारण साहित्य
इस साहित्य में संतों और भक्त कवियों द्वारा रचित भक्ति पद शामिल हैं।	राजस्थानी लोक साहित्य में लोक गीत, लोक कथाएँ, पहेलियाँ, मुहावरे, लोक नाट्य और लोरियाँ आती हैं। यह साहित्य लोक संस्कृति और परंपराओं का एक जीवंत दस्तावेज़ है।	यह साहित्य जैनमुनियों द्वारा लिखा गया है।	चारण साहित्य में वीर रस की प्रधानता होती है, जो राजस्थानी संस्कृति की वीरता और साहस का प्रतीक है।
जैसे - मीराबाई के पद, महाकवि वृंद के दोहे, नाभादास के वैष्णव भक्तों के जीवन चरित, वेलिक्रिसन रूकमणी री, सुन्दर कुंवरी के राम रहस्य पद आदि।	जैसे - देवनारायण महाराज की फड, बापूजी री फड, आदि।	जैसे - भरतेश्वर बाहुबलि घोर, भरतेश्वर बाहुबलिरास,बृद्धिरास, जंबूस्वामी चरित, आबरास, स्थूलिभद्रास, रेवंत गिरिरास, जीवदयारासु, चन्दनबाला रास, आदि।	जैसे - वीर भायण, अचलदास खींची री वचनिका, कान्हड़दे प्रबंध आदि।

1. निम्नलिखित में से सही कथन चुनिए -
[□ L | □ R | □ M]

(A) डिंगल साहित्य मुख्यतः चारण कवियों द्वारा लिखा जाता है।
(B) पिंगल साहित्य भाट कवियों द्वारा लिखा जाता है।
(C) डिंगल का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।
(D) पिंगल का विकास गुर्जरी अपभ्रंश से हुआ है।

विकल्प:-
(1) केवल (A) और (B) सही हैं।
(2) केवल (A) और (C) सही हैं।
(3) केवल (B) और (D) सही हैं।
(4) उपर्युक्त सभी सही हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (1)

व्याख्या -

(A)	✔	डिंगल साहित्य का अधिकांश लेखन चारण कवियों द्वारा किया गया है।
(B)	✔	पिंगल साहित्य का अधिकांश लेखन भाट कवियों द्वारा किया गया है।
(C)	✘	डिंगल का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से नहीं, बल्कि गुर्जरी अपभ्रंश से हुआ है।
(D)	✘	पिंगल का विकास गुर्जरी अपभ्रंश से नहीं, बल्कि शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।

अतिरिक्त जानकारी

राजस्थानी भाषा की साहित्यिक शैली

डिंगल	पिंगल
पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी) का साहित्यिक रूप डिंगल कहलाता है	ब्रजभाषा और पूर्वी राजस्थानी का साहित्यिक रूप पिंगल कहलाता है
डिंगल साहित्य का अधिकांश लेखन चारण जाति के कवियों द्वारा किया गया था।	पिंगल साहित्य का अधिकांश लेखन भाट जाति के कवियों द्वारा किया गया था।
इसका विकास गुर्जरी अपभ्रंश से जोड़ा जाता है	इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से जोड़ा जाता है।
प्रमुख रचनाएँ:- राजरूपक, ढोला मारू रा दूहा, अचलदास खिंची री वचनिका	प्रमुख रचनाएँ: पृथ्वीराज रासो (चंदबरदाई), रतन रासो (कुम्भकरण), खुमान रासो, वंश भास्कर।

2. निम्नलिखित में से राजस्थान की बोलियों के सही समूह का चयन कीजिए – [□ L | □ R | □ M]
(1) मेवाड़ी, मारवाड़ी, बागड़ी, ढूँढाड़ी, काठियावाड़ी
(2) मेवाड़ी, मारवाड़ी, बघेली, ढूँढाड़ी, मालवी
(3) मेवाड़ी, मारवाड़ी, बागड़ी, ढूँढाड़ी, मालवी
(4) मेवाड़ी, मारवाड़ी, बघेली, ढूँढाड़ी, काठियावाड़ी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (3)

व्याख्या - मेवाड़ी, मारवाड़ी, बागड़ी, ढूँढाड़ी एवं मालवी सभी राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ हैं, जबकि अन्य विकल्पों में **काठियावाड़ी (गुजरात)** एवं **बघेली (मध्यप्रदेश)** जैसी राजस्थान के बाहर बोली जाने वाली भाषाएँ शामिल हैं।

अतिरिक्त जानकारी

राजस्थानी बोलियों का वर्गीकरण -

❖ **जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन का वर्गीकरण -**
- राजस्थान की भाषा के लिए 'राजस्थानी' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1907–08 ई. में अपनी पुस्तक 'Linguistic Survey of India' में किया।
- राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति नागर अपभ्रंश से मानी।
- राजस्थानी भाषा का वैज्ञानिक वर्गीकरण प्रस्तुत किया।
- राजस्थानी भाषा को 5 उपशाखाओं में विभाजित किया—

(4) प्राचीन राजस्थान /जनपद काल

परिचय :- वैदिक काल (1500–600 ई.पू.) के अंत के साथ भारतीय उपमहाद्वीप में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन हुए, जिसके परिणामस्वरूप 16 महाजनपदों का उदय हुआ। इस काल (600–300 ई.पू.) को "द्वितीय नगरीकरण" का युग भी कहा जाता है। वर्तमान राजस्थान के विभिन्न क्षेत्र मत्स्य, शूरसेन और कुरु महाजनपदों के अंतर्गत आते थे। सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के बाद मालव, शिवि और अर्जुनायन जैसी जातियाँ राजस्थान में आकर बसीं तथा यहाँ अनेक गणराज्यों का विकास हुआ। इन गणराज्यों ने राजस्थान की प्रारम्भिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1. सूची- I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सही उत्तर का चयन नीचे दिए कूट से कीजिए - [□ L | □ R | □ M]

सूची-I (जनपद)	सूची-II (क्षेत्र)
(A) मालव	(i) चितौड़
(B) वागड़	(ii) भरतपुर
(C) राजन्य	(iii) झालावाड़ व टोंक
(D) शिवि	(iv) डूंगरपुर व बांसवाड़ा

कूट :-

	(A)	(B)	(C)	(D)
(1)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(2)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(3)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(4)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)

(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (3)

व्याख्या -

जनपद	क्षेत्र
(A) मालव	- झालावाड़ व टोंक
(B) वागड़	- डूंगरपुर व बांसवाड़ा
(C) राजन्य	- भरतपुर
(D) शिवि	- चित्तौड़

अतिरिक्त जानकारी

राजस्थान के प्राचीन जनपद -

मालव जनपद -

- ❖ मालव लोगों का मूल स्थान **रावी-चिनाब का संगम क्षेत्र** था।
- ❖ आक्रमणों के कारण ये लोग **टोंक और आसपास के क्षेत्रों** में आ गए।
- ❖ इन्होंने **नगर (टोंक)** को राजधानी बनाया।
- ❖ टोंक जिले के **नगर** और **रैढ़ स्थान** पर मालव जनपद के **सिक्कों का भंडार** मिला है।

वागड़ जनपद -

- ❖ राजस्थान में दो क्षेत्र **वागड़** नाम से प्रसिद्ध थे:
  - ➢ **दक्षिणी राजस्थान** – डूंगरपुर और बाँसवाड़ा।
  - ➢ **उत्तर राजस्थान** – पिलानी के पास नरहड़, भादरा, नोहर और कनणा।
  - ➢ अधिकतर संदर्भ **दक्षिणी राजस्थान (डूंगरपुर-बाँसवाड़ा)** के लिए मिलता है।
  - ➢ यहाँ की बोली को **वागड़ी** कहा जाता है।

शिवि जनपद -

- ❖ शिवि जनपद का प्रारंभिक उल्लेख **सिक्कों** पर मिलता है।
- ❖ राजधानी **शिवपुर** मानी गई, जिसकी पहचान वर्तमान **पाकिस्तान के शोरकोट** से की जाती है।
- ❖ बाद में शिवि जातियां **मेवाड़ क्षेत्र** (चित्तौड़गढ़ के आसपास) में बस गईं।
- ❖ चित्तौड़गढ़ के पास स्थित **माध्यमिका/नगरी** शिवि जनपद की राजधानी थी।
- ❖ मेवाड़ प्रदेश को उस समय **मेदपाट** कहा जाता था।

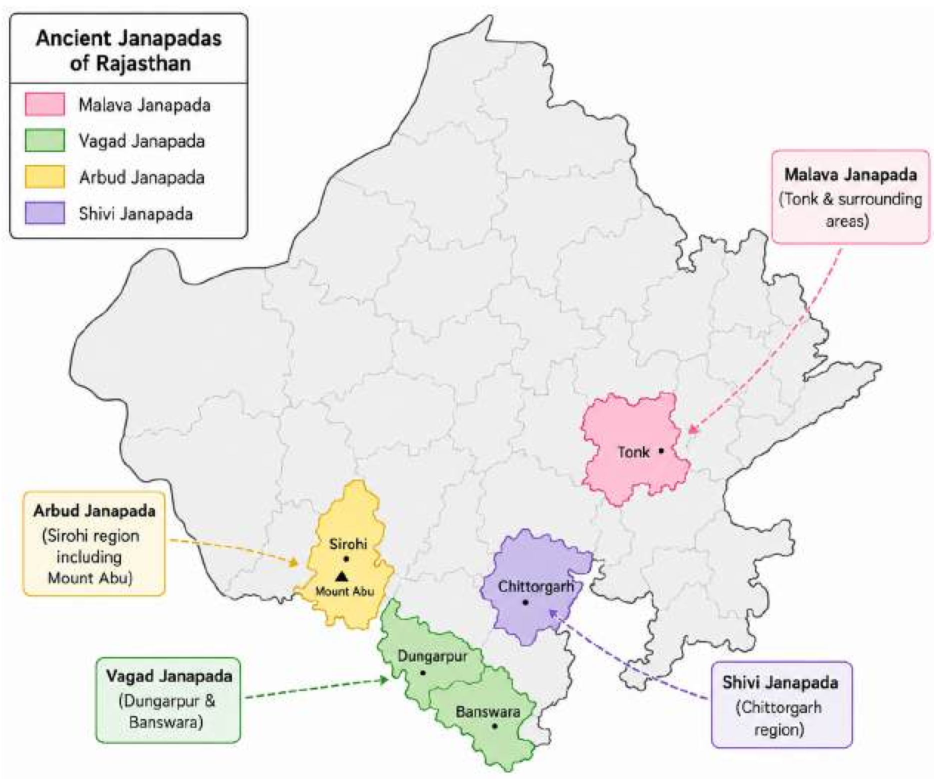

(5) राजस्थान का राजपूत युग

राजस्थान का राजपूत युग

राजपूत युग का उदय -

- **हर्षवर्धन की मृत्यु** के बाद भारत की **राजनैतिक एकता समाप्त** हो गई।
- केंद्रीय शक्ति के अभाव में भारत **अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त** हो गया।
- विभिन्न वंशों के राज्य होते हुए भी इन्हें **सामूहिक रूप से 'राजपूत' कहा गया।**

1. निम्नलिखित में से कौन-से कथन राजपूतों की उत्पत्ति, प्रमुख राजवंशों, एवं ऐतिहासिक साक्ष्यों के संदर्भ में सही और संगत हैं ? [□ L | □ R | □ M]

(A) चंद्रबरदाई के ग्रन्थ पृथ्वीराज रासो के अनुसार राजपूतों की उत्पत्ति एक अग्निकुंड से हुई, जहाँ से चौहान वंश के योद्धाओं का जन्म माना जाता है।

(B) आबू शिलालेख और आटपुर अभिलेख के अभिलेखीय साक्ष्यों से गुहिल वंश को सूर्यवंशी क्षत्रियों का वंश माना गया, जो राजपूतों की आर्य उत्पत्ति को पुष्ट करता है।

(C) कर्नल जेम्स टॉड और विलियम क्रूक के मतानुसार राजपूत स्वदेशी हैं।

(D) चौहान वंश की प्रारंभिक राजधानी नागौर के आसपास स्थित अहिच्छत्रपुर थी और वे सूर्यवंशी होने का दावा करते थे, जबकि डॉ. दशरथ शर्मा ने उन्हें ब्राह्मण वंशी भी माना।

विकल्प:-

(1) केवल (A) और (B) सही हैं।
(2) केवल (C) और (D) सही हैं।
(3) केवल (A), (B) और (D) सही है।
(4) (A), (B), (C), (D) सभी सही हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (3)

व्याख्या -

(A) ✔	पृथ्वीराज रासो में अग्निकुंड उत्पत्ति सिद्धांत का उल्लेख मिलता है तथा चौहानों को अग्निवंशी माना गया है।
(B) ✔	आबू शिलालेख एवं आटपुर अभिलेख में गुहिल वंश को रघुकुल (सूर्यवंशी) बताया गया है।
(C) ✘	जेम्स टॉड एवं विलियम क्रूक ने राजपूतों को हूण, शक, कुषाण आदि विदेशी जातियों से संबंधित माना है, स्वदेशी नहीं।
(D) ✔	चौहानों का प्रारंभिक केंद्र अहिच्छत्रपुर (नागौर) माना जाता है तथा डॉ. दशरथ शर्मा ने बिजोलिया अभिलेख के आधार पर उन्हें ब्राह्मण मूल का भी माना है।

अतिरिक्त जानकारी

- **अग्निकुंड से उत्पत्ति (मिथकीय दृष्टिकोण) -**
  - चंद्रबरदाई के ग्रंथ "पृथ्वीराज रासो" में उल्लेख मिलता है।
  - यह मत राजपूतों की लोककथात्मक और पौराणिक उत्पत्ति को दर्शाता है।
- **अभिलेखीय साक्ष्य – सूर्यवंशी क्षत्रिय -**
  - आबू शिलालेख, आटपुर अभिलेख तथा अन्य स्रोतों में गुहिल वंश को रघुकुल वंशज (सूर्यवंशी क्षत्रिय) माना गया है।
  - इससे यह मत पुष्ट होता है कि राजपूतों की उत्पत्ति आर्य मूल (सूर्यवंशी/चंद्रवंशी) मानी जा सकती है।
- **विदेशी उत्पत्ति का मत -**
  - इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड, विलियम क्रूक आदि के अनुसार राजपूत हूण, शक, कुषाण, पहल्लव जैसी विदेशी और मध्य एशियाई जातियों के मिश्रित वंशज हैं।
  - यह मत राजपूतों की जातीय विविधता और क्षेत्रीय सामंजस्य को दर्शाता है।
- **चौहान वंश की राजधानी -**
  - चौहान वंश का मूल स्थान अहच्छित्रपुर (नागौर क्षेत्र के आसपास) माना जाता है।
  - वे स्वयं को सूर्यवंशी मानते थे।
  - डॉ. दशरथ शर्मा ने बिजोलिया अभिलेख के आधार पर चौहान वंश को ब्राह्मण वंशज भी माना है। यह मत राजपूत वंशों की उत्पत्ति के संबंध में विविधता और बहु-स्तरीय विश्लेषण को प्रकट करता है।

2. निम्न में से कौन-सा विद्वान 'भारतीय आर्य' उत्पत्ति के मत का समर्थक नहीं है? [□ L | □ R | □ M]

(1) डॉ. जगदीश सिंह गहलोत
(2) डॉ. भंडारकर
(3) जी. एच. ओझा
(4) डॉ. दशरथ शर्मा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (2)

(6) मध्यकालीन राजस्थान की राजव्यवस्था/सामंतवाद

सामंत एवं राजस्व व्यवस्था

- ❖ हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद भारत की राजनैतिक एकता समाप्त।
- ❖ **केंद्रीय शक्ति कमजोर** → विभिन्न प्रदेशों में स्थानीय शासकों का उदय।
- ❖ राजस्थान में छोटे-छोटे राज्य उभरे, जहाँ राजा भूमि बाँटकर सामंत नियुक्त करता था।
- ❖ **भूमि का विभाजन: -**
  - ➢ **खालसा भूमि** → राज्य के प्रत्यक्ष नियंत्रण में
  - ➢ **जागीर भूमि** → सामंत/जागीरदारों के पास
  - ➢ **उप-सामंत** → जागीरदारों द्वारा अधीनस्थ नियुक्त

राजसत्ता → जागीरदार → उप-सामंत → जनता

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए – [□ L | □ R | □ M]

(A) भरतू रेख उत्तराधिकारी शुल्क का एक प्रकार है।
(B) जो भूमि सीधे शासक के नियंत्रण में होती थी, उसे खालसा कहा जाता था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल कथन (A) सही है
(2) केवल कथन (B) सही है
(3) कथन (A) और (B) दोनों सही है
(4) न तो कथन (A) और न ही (B) सही है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (2)

व्याख्या -

(A) ✘	भरतू रेख उत्तराधिकारी शुल्क नहीं, बल्कि जागीर से राज्य को देय राजस्व निर्धारित करने की एक व्यवस्था थी।
(B) ✔	खालसा वह भूमि थी जिसका प्रशासन एवं राजस्व संग्रह सीधे शासक या राज्य के नियंत्रण में होता था।

अतिरिक्त जानकारी

भरतू रेख –
- ❖ **परिभाषा:** भरतू रेख से तात्पर्य था कि राज्य द्वारा सामंत को प्रदत्त जागीर के पट्टे में जो रेख (लाइन) खींची जाती थी, उसके अनुसार राजस्व की राशि निश्चित होती थी। सामंत को जागीर की आय का एक भाग इस रेख के अनुसार राज्य को अर्पित करना पड़ता था।
- ❖ **उद्देश्य:** जागीर से राज्य के लिए नियमित राजस्व सुनिश्चित करना। सामंतों के अधिकार और राज्य के अधिकार में संतुलन बनाए रखना।
- ❖ **महत्त्व:** यह कोई **उत्तराधिकारी शुल्क (succession fee)** नहीं था, बल्कि **राजस्व व्यवस्था का हिस्सा** था। इस व्यवस्था से जागीर प्रथा के भीतर वित्तीय अनुशासन और राज्य की आय निश्चित रहती थी।

खालसा भूमि –
- ❖ **परिभाषा: -** खालसा भूमि वह भूमि होती थी, जो **सीधे शासक या बादशाह के नियंत्रण में** रहती थी। इसे **केन्द्रीय भूमि** भी कहा जाता था।
- ❖ **मुगल कालीन संदर्भ: -** मुगलकालीन समय में खालसा भूमि से प्राप्त **संपूर्ण आय शाही कोष (राजकोष)** में जमा की जाती थी। इस भूमि का प्रशासन सीधे **राज्य के अधिकारियों** द्वारा किया जाता था, न कि किसी सामंत या जागीरदार के माध्यम से।
- ❖ **महत्त्व: -** राज्य के लिए **नियमित एवं प्रत्यक्ष राजस्व स्रोत**। शासक के **आर्थिक और प्रशासनिक अधिकारों** को मजबूत करने का माध्यम।

2. मध्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था में केन्द्रीय शासन व्यवस्था का सही क्रम (ऊपर से नीचे की ओर) क्या है? [□ L | □ R | □ M]

(1) राजा → प्रधान → दीवान → नायब बख्शी → शिकदार
(2) राजा → प्रधान → दीवान → शिकदार → नायब बख्शी
(3) राजा → दीवान → प्रधान → शिकदार → नायब बख्शी
(4) राजा → प्रधान → शिकदार → दीवान → नायब बख्शी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (1)

व्याख्या -

केन्द्रीय शासन व्यवस्था का सही क्रम (ऊपर से नीचे की ओर) - राजा → प्रधान → दीवान → नायब बख्शी → शिकदार

अतिरिक्त जानकारी

प्रशासनिक श्रेणीक्रम (ऊपर से नीचे) -

(7) 1857 की क्रांति एवं ब्रिटिश हस्तक्षेप

राजस्थान में 1857 की क्रांति

पूर्व पृष्ठभूमि (1818–1856) -

- ❖ 1818 ई. – राजस्थान की रियासतों ने अंग्रेजों से संधियाँ कीं।
- ❖ अंग्रेजों ने आंतरिक शासन में हस्तक्षेप शुरू किया।
- ❖ सामंतों के अधिकार सीमित हुए।
- ❖ किसानों, व्यापारियों, कारीगरों पर आर्थिक शोषण बढ़ा।
- ❖ ब्राउन बेस राइफल के स्थान पर एनफील्ड राइफल लागू हुई।
- ❖ कारतूसों में गाय व सूअर की चर्बी – धार्मिक असंतोष फैला।
- ❖ राजपूताना एजेंसी की स्थापना – 1832 ई., मुख्यालय अजमेर।
- ❖ 1857 में ए.जी.जी. – जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस।

1. निम्नलिखित में से किन सैनिक छावनियों ने 1857 की क्रांति में भाग नहीं लिया? [◻ L | ◻ R | ◻ M]

   (A) खैरवाड़ा
   (B) देवली
   (C) ब्यावर
   (D) नीमच

   कूट:-

   (1) केवल (A)
   (2) केवल (B)
   (3) केवल (A) और (C)
   (4) केवल (A),(B) और (C)
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (3)

व्याख्या - 1857 की क्रांति में राजस्थान की नसीराबाद, नीमच और एरिनपुरा छावनियों में सैनिक विद्रोह हुआ, जबकि खैरवाड़ा और ब्यावर छावनियाँ विद्रोह से अप्रभावित रहीं।

अतिरिक्त जानकारी

राजस्थान की छावनियाँ (कुल 6) - (1) नसीराबाद (2) नीमच (3) देवली (4) ब्यावर (5) एरिनपुरा (6) खैरवाड़ा

क्रांति में भाग नहीं लेने वाली छावनियाँ -

(1) ब्यावर (2) खैरवाड़ा

क्रांति की शुरुआत -

- ❖ तारीख: 28 मई 1857
- ❖ स्थान: नसीराबाद छावनी
- ❖ दल: 15वीं बंगाल नेटिव इन्फेन्ट्री
- ❖ **घटनाएँ: -**
  - ➢ विद्रोह कर छावनी लूटी।
  - ➢ अंग्रेज अधिकारियों के बंगलों पर हमला।
  - ➢ मेजर स्पोटिस वुड और न्यूबरी की हत्या।
  - ➢ विद्रोही दिल्ली की ओर रवाना हुए और 18 जून को दिल्ली पहुँचकर अंग्रेज पलटन को हराया।

नीमच का विद्रोह (3 जून 1857) -

- ❖ नसीराबाद की घटना की सूचना मिलने पर विद्रोह।
- ❖ शस्त्रागार को आग लगाई और अंग्रेजों पर हमला।
- ❖ सार्जेन्ट की पत्नी और बच्चों की हत्या।
- ❖ सैनिक चित्तौड़, हम्मीरगढ़, बनेड़ा होते हुए शाहपुरा और टोंक पहुँचे।
- ❖ दिल्ली की ओर प्रस्थान।

अन्य घटनाएँ -

- ❖ टोंक की जनता ने नवाब के आदेशों की अवहेलना कर विद्रोहियों का स्वागत किया।
- ❖ कैप्टन शावर्स ने कोटा, बूंदी और मेवाड़ की सेना की मदद से नीमच पर पुनः अधिकार कर लिया।

एरिनपुरा लीजियन(जोधपुर लीजियन) -

- ❖ स्थापना का वर्ष: 1835 ईस्वी
- ❖ स्थान: एरिनपुरा (राजस्थान)
- ❖ **स्थापना का कारण:-**
  - ➢ ईस्ट इंडिया कंपनी ने जोधपुर राज्य के सवारों की अकुशलता का बहाना बनाया।
  - ➢ कंपनी ने राज्य के खर्चे पर यह दस्ता तैयार किया।
- ❖ **नियंत्रण:-**
  - ➢ ब्रिटिश अधिकारियों के अधीन रखा गया।
- ❖ **भूमिका:-**
  - ➢ राजस्थान में ब्रिटिश प्रभाव को मजबूत करने हेतु सैन्य शक्ति।
  - ➢ 1857 की क्रांति में भी एरिनपुरा एक महत्त्वपूर्ण छावनी के रूप में उल्लेखित।

2. निम्नलिखित में से छावनी एवं वर्तमान जिले के असंगत युग्म का चयन कीजिए – [◻ L | ◻ R | ◻ M]

   (1) एरिनपुरा – पाली
   (2) खैरवाड़ा – उदयपुर
   (3) नीमच – कोटा
   (4) नसीराबाद – अजमेर
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (3)

व्याख्या - एरिनपुरा–पाली, खैरवाड़ा–उदयपुर और नसीराबाद –

(8) राजस्थान के प्रमुख किसान आंदोलन एवं जनजाति आंदोलन

परिचय: - 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश संरक्षण संधियों (1818) के बाद राजस्थान की रियासतों में एक नई प्रशासनिक एवं आर्थिक व्यवस्था विकसित हुई। ब्रिटिश सरकार को कर भुगतान, सामंती शोषण, अत्यधिक भू-राजस्व, लाग-बाग, बेगार तथा किसानों एवं जनजातियों के पारंपरिक अधिकारों पर नियंत्रण ने ग्रामीण समाज में व्यापक असंतोष उत्पन्न किया। 1878 ई. के बाद लागू नई भू-राजस्व व्यवस्थाओं का उद्देश्य कृषि सुधार नहीं, बल्कि राज्य की आय में वृद्धि था, जिससे किसानों की गरीबी, ऋणग्रस्तता एवं असंतोष बढ़ा। परिणामस्वरूप बिजौलिया, बेगूं, शेखावाटी, सीकर, मेव तथा भील जैसे किसान एवं जनजातीय आंदोलन उभरे। इन आंदोलनों की एक प्रमुख विशेषता यह थी कि अधिकांश आंदोलन अहिंसक रहे, जबकि प्रारंभिक जनजातीय प्रतिरोध मेर, मीणा एवं भील समुदायों से उभरा। गोविन्द गुरु, मोतीलाल तेजावत, विजय सिंह पथिक, यासीन खाँ आदि नेताओं ने इन आंदोलनों को दिशा प्रदान की। इन संघर्षों ने न केवल शोषणकारी व्यवस्थाओं को चुनौती दी, बल्कि राजस्थान में जनजागरण, राजनीतिक चेतना तथा प्रजामंडल आंदोलनों की पृष्ठभूमि भी तैयार की।

1. सूची- I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सही उत्तर का चयन नीचे दिए कूट से कीजिए - [□ L | □ R | □ M]

सूची-I (किसान आंदोलन)	सूची-II (जिला)
(A) बरड़	(i) चित्तौड़गढ़
(B) बेगूँ	(ii) जोधपुर
(C) नीमराणा (मेव)	(iii) बूंदी
(D) मारवाड़	(iv) अलवर

कूट:-

	(A)	(B)	(C)	(D)
(1)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(2)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(3)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(4)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)

(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (4)

व्याख्या -

किसान आंदोलन	जिला
(A) बरड़	- बूंदी
(B) बेगूँ	- चित्तौड़गढ़
(C) नीमराणा (मेव)	- अलवर
(D) मारवाड़	- जोधपुर

अतिरिक्त जानकारी

बरड़ किसान आंदोलन (बूंदी) -

- ❖ स्थान: बूंदी राज्य का बरड़ क्षेत्र।
- ❖ समय: अप्रैल 1922 ई.
- ❖ कारण: विभिन्न प्रकार के लगान, बेगार और शोषण।
- ❖ नेतृत्व: राजस्थान सेवा संघ के कार्यकर्त्ता 1922 ई. में पं. नयनूराम शर्मा के नेतृत्व में (सहयोगी – हरिभाई किंकर एवं रामनारायण चौधरी) बरड़ (बूँदी)
- ❖ परिणाम: 1927 ई. के बाद राजस्थान सेवा संघ के अंतर्विरोधों के कारण आंदोलन समाप्त।
- ❖ 2 अप्रैल 1923 को डाबी में किसानों के सम्मेलन को रोकने के लिए पुलिस सुपरिटेंडेंट इकराम हुसैन, थानेदार कल्याणसिंह तथा कोतवाल सरदारमल द्वारा गोली चलवाई गई, जिसमें नानकजी भील एवं देवलाल गुर्जर घटना स्थल पर शहीद हो गए। यह घटना विजयसिंह पथिक द्वारा रचित झंडा गीत गाते समय हुई।
- ❖ आंदोलन के प्रमुख क्षेत्र – बरड़, डाबी, बरूंधान, नीमाणा एवं गरदड़ा।
- ❖ बूँदी में किसान आंदोलन के साथ-साथ गुर्जरों का आंदोलन भी हुआ।

बेगूँ किसान आंदोलन (चित्तौड़गढ़) -

- ❖ स्थान: चित्तौड़ जिले का बेगूँ गांव।
- ❖ समय: 1921ई.।
- ❖ नेतृत्त्व: प्रारंभिक नेतृत्त्व रामनारायण चौधरी, बाद में विजयसिंह पथिक।
- ❖ राजस्थान सेवा संघ एवं ठाकुर नूप सिंह के बीच समझौता हुआ जिसे बोलसेविक समझौते की संज्ञा दी जाती हैं।
- ❖ **घटनाएं:-**
  - ➢ 1923 में किसानों व ठाकुर अनूप सिंह के बीच समझौता, लेकिन सरकार ने रद्द किया।
  - ➢ जुलाई 1923 में सभा पर लाठीचार्ज; रूपाजी और कृपाजी धाकड़ शहीद।
  - ➢ 1925 के समझौते में लाटा-कुंता प्रथा, बेगार प्रथा समाप्त; भूमि बंदोबस्ती लागू।

गोविन्दपुरा त्रासदी (बेगूं किसान आंदोलन, 13 जुलाई 1923) -

- ❖ घटना : भूमि विवाद और करों के विरोध में आंदोलन।
- ❖ गोलीबारी : भूमि बंदोबस्त अधिकारी ट्रेंच द्वारा गोली

(9) राजस्थान का एकीकरण , प्रजामंडल आंदोलन एवं प्रमुख समाचार पत्र

परिचय: - 20वीं शताब्दी के तीसरे दशक में राजस्थान की रियासतों में निरंकुश शासन, नागरिक अधिकारों के अभाव तथा उत्तरदायी शासन की मांग के परिणामस्वरूप प्रजामंडल आंदोलनों का उदय हुआ। इन आंदोलनों को अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् (1927) एवं राजपूताना देशी राज्य लोक परिषद् (1928) से वैचारिक एवं संगठनात्मक आधार मिला। 1938 के हरिपुरा अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा समर्थन मिलने के बाद प्रजामंडल आंदोलनों को नई गति प्राप्त हुई। इन आंदोलनों ने राजस्थान में राजनीतिक जागरण, सामाजिक सुधार, किसान हितों की रक्षा तथा लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अंततः राजस्थान के शांतिपूर्ण एकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

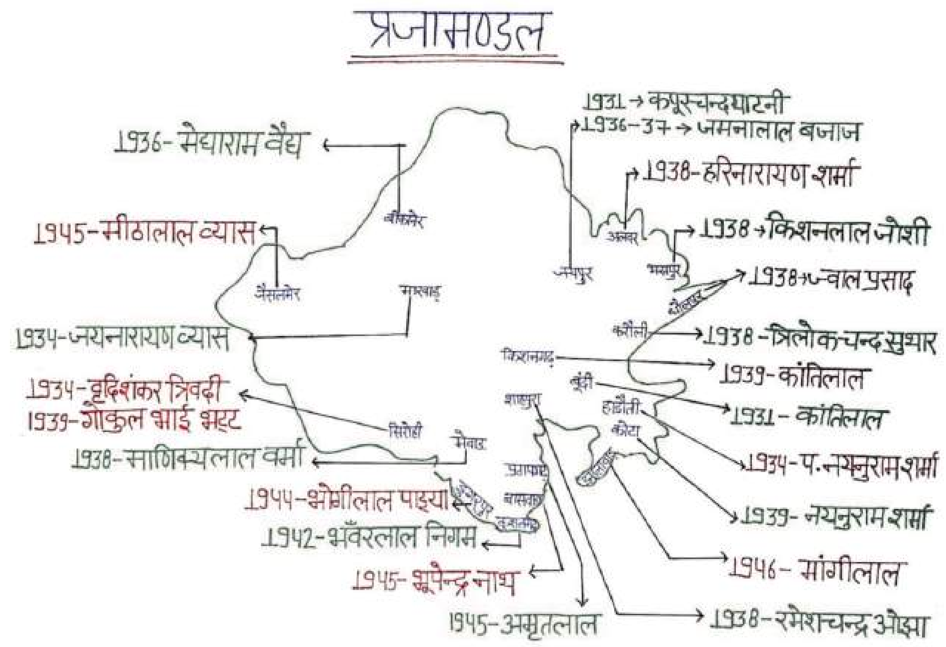

राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण

1. निम्नलिखित का मिलान करें - [□ L | □ R | □ M]

(एकीकरण के समय रियासतें)	(शासक)
(A) बीकानेर	(i) उदयभान सिंह
(B) धौलपुर	(ii) बहादुर सिंह
(C) बूंदी	(iii) शार्दुल सिंह
(D) शाहपुरा	(iv) सुदर्शन देव

कूट:-

	(A)	(B)	(C)	(D)
(1)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(2)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(3)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(4)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)

(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर : (3)

व्याख्या :-

रियासतें	शासक
(A) बीकानेर	- शार्दुल सिंह
(B) धौलपुर	- उदयभान सिंह
(C) बूंदी	- बहादुर सिंह
(D) शाहपुरा	- सुदर्शन देव
अतिरिक्त जानकारी	
एकीकरण या आजादी के समय रियासतों के शासक	
रियासत	**शासक**
• मेवाड़ / उदयपुर	- भूपाल सिंह
• मारवाड़ / जोधपुर	- हनुमंत सिंह
• जयपुर	- सवाई मानसिंह II
• बीकानेर	- शार्दुल सिंह
• अलवर	- तेजसिंह
• धौलपुर	- उदयभान सिंह

(10) राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्त्व

परिचय :- राजस्थान वीरता, त्याग, लोकजागरण और सांस्कृतिक चेतना की भूमि रही है। इस धरती ने ऐसे अनेक महान व्यक्तित्वों को जन्म दिया जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक सुधार, साहित्य तथा कला-संस्कृति के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया। अर्जुनलाल सेठी, विजय सिंह पथिक, माणिक्यलाल वर्मा एवं केसरीसिंह बारहठ ने स्वतंत्रता आंदोलन और जनजागरण को नई दिशा दी। गोविन्द गुरु, भोगीलाल पांड्या एवं हरिभाऊ उपाध्याय ने सामाजिक सुधार, जनजातीय उत्थान एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए। वहीं सूर्यमल्ल मिश्रण, कन्हैयालाल सेठिया एवं विजयदान देथा ने साहित्य के माध्यम से राजस्थान की लोकसंस्कृति और राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्ति दी। कोमल कोठारी एवं देवीलाल सामर ने लोककला, लोकसंगीत और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन में उल्लेखनीय योगदान दिया। इन विभूतियों के योगदान ने राजस्थान की विशिष्ट पहचान को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया।

1. ठाकुर केसरी सिंह ने किसके बारे में कहा था –
"जिस प्रकार पंजाब को लाला लाजपत राय पर और महाराष्ट्र को बाल गंगाधर तिलक पर गर्व है, उसी प्रकार राजस्थान को _______ पर गर्व है?"
(1) राव गोपाल सिंह खरवा [□ L | □ R | □ M]
(2) सागरमल गोपा
(3) माणिक्यलाल वर्मा
(4) अर्जुनलाल सेठी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (1)

व्याख्या - राव गोपाल सिंह खरवा राजस्थान के प्रमुख राष्ट्रवादी नेता एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। अंग्रेज़ों के विरुद्ध उनके साहस, राष्ट्रभक्ति और जनजागरण के कार्यों से प्रभावित होकर ठाकुर केसरी सिंह बारहठ ने कहा था— "जिस प्रकार पंजाब को लाला लाजपत राय पर और महाराष्ट्र को बाल गंगाधर तिलक पर गर्व है, उसी प्रकार राजस्थान को गोपाल सिंह खरवा पर गर्व है।"

अतिरिक्त जानकारी

राव गोपाल सिंह खरवा -

- ❖ **जन्म और परिचय** – राव गोपाल सिंह खरवा (1872–1939) राजपूताना की **खरवा रियासत के शासक** थे।
- ❖ **अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह** – अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह करने के आरोप में उन्हें **टॉडगढ़ दुर्ग में 4 वर्ष का कारावास** दिया गया।
- ❖ **वीर भारत सभा** – 1910 ई. में **केसरी सिंह बारहठ, विजय सिंह पथिक और राव गोपाल सिंह खरवा** ने मिलकर **वीर भारत सभा की स्थापना** की।

2. सूची -I को सूची -II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर चुनिए -
[□ L | □ R | □ M]

सूची-I (व्यक्ति)	सूची-II (संबंध)
(A) बावजी चतुरसिंह	(i) साहित्य
(B) स्वामी केशवानन्द	(ii) ब्लू पॉटरी
(C) पं. झाबरमल शर्मा	(iii) शिक्षा के क्षेत्र मे उत्कृत कार्य
(D) कृपालसिंह शेखावत	(iv) पत्रकारिता

कूट:-

	(A)	(B)	(C)	(D)
(1)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(2)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(3)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(4)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)

(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (1)

व्याख्या -

व्यक्ति	संबंध
(A) बावजी चतुरसिंह	- साहित्य
(B) स्वामी केशवानन्द	- शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य
(C) पं. झाबरमल शर्मा	- पत्रकारिता
(D) कृपालसिंह शेखावत	- ब्लू पॉटरी

अतिरिक्त जानकारी

बावजी चतुरसिंह (साहित्यकार) -

- ❖ राजस्थान के प्रसिद्ध साहित्यकार।
- ❖ इनकी कृतियाँ लोकजीवन और संस्कृति से प्रेरित रही हैं।
- ❖ साहित्य के क्षेत्र में इनका योगदान राजस्थान की

(11) राजस्थान की चित्रकला , स्थापत्य एवं शिल्प कला

परिचय :- राजस्थान की कला एवं वास्तुकला उसकी भौगोलिक परिस्थितियों, सांस्कृतिक विविधता तथा राजवंशीय संरक्षण का सजीव प्रतिबिंब है। कालीबंगा, सौंथी, आहड़ एवं गिलुंड जैसी प्राचीन सभ्यताओं से यहाँ की उन्नत नगर नियोजन परंपरा के प्रमाण मिलते हैं, जबकि चित्तौड़, रणथम्भौर और जैसलमेर जैसे दुर्ग इसकी स्थापत्य उत्कृष्टता को दर्शाते हैं। जयपुर नगर का नियोजन विद्याधर भट्टाचार्य द्वारा नौ-ग्रिड योजना पर किया गया, जो भारतीय नगर नियोजन का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। दूसरी ओर, राजस्थान में चित्रकला की समृद्ध परंपरा का विकास लगभग 1500 ई. में मेवाड़ (मेदपाट) में हुआ, जिसे राजस्थानी चित्रकला का जन्मस्थान माना जाता है। प्रारम्भ में इस पर अजन्ता, जैन, गुजरात एवं अपभ्रंश शैली का प्रभाव था, जबकि बाद में मुगल शैली का प्रभाव दिखाई देता है। 18वीं शताब्दी राजस्थानी चित्रकला का स्वर्ण युग मानी जाती है। प्रकृति, भक्ति, श्रृंगार, रागमाला, बारहमासा, शिकार दृश्य एवं लोकजीवन इसके प्रमुख विषय रहे। दुर्ग, मंदिर, महल, हवेलियाँ, बावड़ियाँ एवं झीलें जहाँ राजस्थान की स्थापत्य पहचान हैं, वहीं मेवाड़, मारवाड़, हाड़ौती एवं ढूंढाड़ शैलियों ने राजस्थानी चित्रकला को भारतीय कला जगत में विशिष्ट स्थान प्रदान किया। मंदिर वास्तुकला की दृष्टि से राजस्थान मुख्यतः नागर शैली से प्रभावित रहा है, जिसकी विशेषता वक्राकार शिखर एवं अलंकृत नक्काशी है।

राजस्थान की प्रमुख चित्रशैलियाँ

1. निम्नलिखित स्थानों में से किस स्थान पर आदिमानव कालीन चित्र शैली के प्रमाण मिले हैं?

(A) आलनिया [□ L | □ R | □ M]
(B) दर्रा
(C) दर
(D) बैराठ

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प का चयन कीजिए-

(1) केवल (A) और (B)
(2) केवल (B) और (C)
(3) केवल (A), (B) और (C)
(4) उपर्युक्त सभी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (4)

व्याख्या - राजस्थान में आलनिया, दर्रा, दर तथा बैराठ से आदिमानव कालीन शैलचित्रों के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

अतिरिक्त जानकारी

आदिमानव कालीन चित्र शैली -

- ❖ आदिमानव ने अपने मन के विचारों को दूसरों तक प्रकट करने के लिए गुफाओं की दीवारों पर चित्र बनाएँ, उन्हें प्रागैतिहासिक-शैल चित्र कहते हैं।
- ❖ राजस्थान में आलनिया, दर्रा (कोटा), बैराठ (कोठपुतली - बहरोड़) तथा दर (भरतपुर) नामक स्थानों से शैलाश्रयों (गुफाओं) में आदिमानव द्वारा बनाये रेखांकन की प्रारम्भिक चित्रण परम्परा को दर्शाते हैं।

2. अधोलिखित कथनों पर विचार कर सही विकल्प का चयन कीजिए ? [□ L | □ R | □ M]

(A) राजस्थान में सन् 1953 में चित्रित शैलाश्रयों की खोज वी. एस. वाकणकर ने की थी।
(B) डगलस बैरेट एवं बेसिल गे ने ढूंढाड़ शैली को चौरपंचाशिका शैली का उद्गम माना है।

(1) केवल कथन (A) सही है
(2) केवल कथन (B) सही है
(3) कथन (A) और (B) दोनों सही हैं
(4) कथन (A) और (B) दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (1)

व्याख्या -

(A)	✔	1953 में **वी.एस. वाकणकर** ने राजस्थान के कोटा (दर्रा, चम्बल घाटी), झालावाड़ (कालीसिंध घाटी) तथा माउंट आबू क्षेत्र में **चित्रित शैलाश्रयों** की खोज की थी।
(B)	✘	**डगलस बैरेट एवं बेसिल गे** ने **मेवाड़ शैली** को **चौरपंचाशिका शैली** का उद्गम माना है, **ढूंढाड़ शैली** को नहीं।

अतिरिक्त जानकारी

- ❖ **वी.एस. वाकणकर -** वी.एस. वाकणकर ने राजस्थान में 1953 में कोटा में चम्बल घाटी और दर्रा, झालावाड़ के निकट कालीसिंध घाटी और अरावली में माउंट आबू तथा ईडर में चित्रित शैलाश्रयों की खोज की।

मेवाड़ चित्रकला शैली -

उत्पत्ति और प्रारंभ -

- ❖ राजस्थान की चित्रकला की **मूल व सबसे प्राचीन शैली**।
- ❖ प्रारंभ : **महाराणा कुम्भा के काल** से।
- ❖ इसलिए महाराणा कुम्भा को **राजस्थान में चित्रकला का जनक** कहा जाता है।

(12) राजस्थान की हस्तशिल्प (कपड़ा, मूर्ति, प्रिंट)

परिचय: - सभ्यता के आरंभिक काल से ही भारत में विभिन्न कलाओं का विकास हो गया था। राजस्थान का इतिहास भी इन कलाओं के विकास में अत्यंत प्राचीन है। इसके प्रमाण तृतीय शताब्दी के आहत सिक्कों (नगर) तथा विराटनगर बौद्ध चैत्य में उपयोग किए गए 26 लकड़ी के स्तंभों से मिलते हैं। वर्तमान में राजस्थानी बांधनी, कुन्दन मीनाकारी, हैण्ड ब्लॉक प्रिटिंग, आभूषण, वस्त्र, कीमती हीरे-जवाहरात एवं जड़ाऊ आभूषणों, ब्लू पॉटरी आदि हस्तकला के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं।

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए तथा नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प का चयन कीजिए – [◻ L | ◻ R | ◻ M]

(A) देवलिया या देवल वे स्मारक हैं जो शासकों, सामंतों और सेनानायकों की समाधियों पर छतरियों के रूप में बनाए जाते हैं।

(B) सांझी लोककला में कागज पर रंगीन चित्र बनाकर मंदिरों में सजावट की जाती है।

(1) केवल कथन (A) सही है।
(2) केवल कथन (B) सही है।
(3) कथन (A) और (B) दोनों सही हैं।
(4) कथन (A) और (B) दोनों गलत हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (1)

व्याख्या -

(A)	✔	देवलिया या देवल देश की रक्षा में वीरगति प्राप्त करने वाले शासकों, सामंतों एवं सेनानायकों की स्मृति में उनकी समाधियों पर निर्मित छतरीनुमा स्मारक होते हैं।
(B)	✘	सांझी लोककला में लड़कियाँ घर की दीवारों या दरवाजों पर गोबर से विभिन्न आकृतियाँ बनाकर उन्हें फूल, पत्तियों एवं रंग-बिरंगी वस्तुओं से सजाती हैं। कागज पर रंगीन चित्र बनाकर मंदिर सजाना इसकी विशेषता नहीं है।

अतिरिक्त जानकारी

देवलिया या देवल –

परिभाषा – देश की रक्षा में प्राण न्योछावर करने वाले **शासकों, सामंतों और सेनानायकों की स्मृति में निर्मित समाधि-छतरियाँ** 'देवलिया' या 'देवल' कहलाती हैं।

- ❖ **विशेषता** – इन स्थलों पर पत्थर या संगमरमर की छतरियां होती हैं, जो उनकी वीरता और बलिदान की याद में बनवाई जाती थीं।

मेलों का आयोजन –

- ❖ इन स्थानों पर प्रति वर्ष **मेलों या स्मृति-समारोहों** का आयोजन किया जाता है।

सांझी -

- ❖ **स्थान और प्रक्रिया** – घर के बाहर, दरवाजे या दीवारों पर **गाय के गोबर से लड़कियां विभिन्न कलाकृतियाँ** बनाती हैं।
- ❖ **मुख्य आकृतियाँ** – संझा देवी, उसकी बहन फूहड़ और खोड़ा काना बामन की आकृतियाँ बनाई जाती हैं।
- ❖ **सजावट** – हार, चूड़ियां, फूल-पत्ते, मालीपन्ना, सिंदूर और रंग-बिरंगे कपड़ों से सजाया जाता है।
- ❖ **पर्व** – **भाद्रपद पूर्णिमा से आश्विन अमावस्या** तक सांझी पर्व मनाया जाता है।

गोदना -

- ❖ शरीर के किसी अंग पर **सुई या कांटे की सहायता से कलात्मक चित्रांकन** करना या करवाना।

मांडना -

- ❖ इसे **साठिया, स्वास्तिक या पगलिया** भी कहा जाता है।
- ❖ वैवाहिक या शुभ अवसरों पर बनाई जाती है।
- ❖ बच्चे के जन्म पर आंगन में बनाई जाने वाली कलात्मक आकृति **मांडना** कहलाती है।

स्वास्तिक / ताम -

- ❖ **शुभ अवसरों** पर स्वास्तिक बनाना।
- ❖ **भील जाति** के लोग विवाह के समय दीवारों पर जो भित्ति चित्र बनाते हैं, उन्हें **ताम** कहते हैं।
- ❖ देवी-देवताओं के पद चिह्नो को आंगन में उकेरना **पगलिया** कहलाता है।

2. सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर चुनिए - [◻ L | ◻ R | ◻ M]

सूची - I (मूर्ति/प्रतिमा)	सूची - II (प्राप्त स्थान)
(A) एक मुखी शिवलिंग	(i) नोह (भरतपुर)
(B) जाखबाबा	(ii) रंगमहल (हनुमानगढ़)
(C) सर्पफणा बलराम	(iii) उदयपुर
(D) गरुड़ मूर्ति	(iv) रूपवास (भरतपुर)

(13) राजस्थान का संगीत , लोक गीत , वाद्य एवं नृत्य

परिचय :- राजस्थान की लोकसंस्कृति लोकगीतों, लोकवाद्यों और लोकनृत्यों के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखती है। लोकगीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक परंपरा से हस्तांतरित होते हुए जनजीवन की भावनाओं, संस्कारों, रीति-रिवाजों, ऋतुओं, त्योहारों एवं लोकदेवताओं की अभिव्यक्ति करते हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लोकगीतों को "संस्कृति की कला" तथा महात्मा गांधी ने "जनता की भाषा और संस्कृति के संरक्षक" कहा है। इन लोकगीतों की प्रस्तुति में विभिन्न स्थानीय सामग्रियों से निर्मित लोकवाद्ययंत्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है, जिनमें सूखी लौकी, बाँस, लकड़ी, मिट्टी एवं धातु से बने वाद्य प्रमुख हैं। वहीं राजस्थान के लोकनृत्य ग्रामीण जीवन, सामाजिक परंपराओं और उत्सवों से जुड़े हुए हैं तथा विवाह, मेलों, पर्वों एवं धार्मिक अवसरों पर प्रस्तुत किए जाते हैं। मध्यकाल में राजपूत रियासतों के संरक्षण से इन लोककलाओं का व्यापक विकास हुआ। लोकगीत, लोकवाद्य और लोकनृत्य राजस्थान की लोकआत्मा, सांस्कृतिक विविधता और सामुदायिक जीवन के जीवंत प्रतीक हैं।

राजस्थान के लोकगीत एवं लोकसंगीत

1. राजस्थानी लोक गीतों के बारे में अधोलिखित कथनों पर विचार कीजिए – [□ L | □ R | □ M]
   (A) बालक के जन्म पर गाये जाने वाले गीत जच्चा कहलाते हैं।
   (B) वधू के घर की स्त्रियों द्वारा वर की बारात का डेरा देखने का प्रसंग जला गीतों में मिलता है।
   (C) शीतला माता के भक्तों में लांगुरिया गीत लोकप्रिय है।
   (D) सीठणें वे लोक गीत हैं जो विवाह के समय दुल्हे की सालियों द्वारा गाये जाते हैं।
   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?
   (1) केवल (A) और (B)
   (2) केवल (A) और (D)
   (3) केवल (A), (B) और (C)
   (4) केवल (B), (C) और (D)
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (1)

व्याख्या -

(A) ✔	बालक के जन्म के अवसर पर गाए जाने वाले लोकगीत "जच्चा गीत" कहलाते हैं।
(B) ✔	जला गीतों में वधू पक्ष की स्त्रियों द्वारा वर की बारात एवं उसके डेरे को देखने का प्रसंग वर्णित होता है।
(C) ✘	लांगुरिया गीत शीतला माता से नहीं, बल्कि करौली की कैला देवी की आराधना से संबंधित हैं।
(D) ✘	दूल्हे की सालियों द्वारा दुपट्टा गीत गाए जाते हैं, जबकि सीठणें गीत समधी पक्ष पर हास्य-व्यंग्य के रूप में गाए जाते हैं।

अतिरिक्त जानकारी

सीठणे गीत/गाली गीत -
- ❖ विवाह के समय **हंसी-मजाक के उद्देश्य** से गाये जाते हैं।
- ❖ समधी और उसके अन्य संबंधियों को संबोधित करते हुए स्त्रियां गाती हैं।

2. निम्नलिखित गीतों में से कौन-सा गीत बच्चों के खेल-गीत से संबंधित नहीं है ? [□ L | □ R | □ M]
   (A) थारी ऊँटा री असवारी
   (B) सुपणा
   (C) काकड़ वेल मतीरा पाक्या, टींडसियां का टोरा लाग्या, राजाजी राजाजी खोलो कुँवाड़
   (D) टम्पो घोड़ी फूल गुलाब रो
   नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प का चयन कीजिए-
   (1) केवल (B)
   (2) केवल (D)
   (3) केवल (A) और (B)
   (4) केवल (C) और (D)
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (3)

व्याख्या -

(A) ✘	'थारी ऊँटा री असवारी' मेवाड़ क्षेत्र का प्रमुख लोकगीत है, यह बच्चों का खेल-गीत नहीं है।
(B) ✘	'सुपणा' पत्नी द्वारा पति के वियोग में गाया जाने वाला विरह गीत है, यह बच्चों का खेल-गीत नहीं है।
(C) ✔	'काकड़ वेल मतीरा पाक्या, टींडसियां का टोरा लाग्या, राजाजी राजाजी खोलो कुँवाड़' बच्चों का प्रमुख खेल-गीत है।
(D) ✔	'टम्पो घोड़ी फूल गुलाब रो' राजस्थान का प्रसिद्ध बच्चों का खेल-गीत है।

(14) राजस्थान के प्रमुख लोक नाट्य

परिचय: - राजस्थान की लोकनाट्य परंपरा लोकसंस्कृति, लोकसाहित्य और जनजीवन का सशक्त माध्यम रही है। लोकनाट्य में नृत्य, संगीत, अभिनय, संवाद एवं कथावाचन का समन्वित रूप देखने को मिलता है, जिसके माध्यम से धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं लोककथात्मक विषयों का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। रामायण, महाभारत तथा स्थानीय लोककथाओं ने राजस्थान की लोकनाट्य परंपराओं को गहराई से प्रभावित किया है। ख्याल, रम्मत, गवरी, तुर्रा-कलंगी, नौटंकी, स्वांग तथा रामलीला-रासलीला राजस्थान के प्रमुख लोकनाट्य रूप हैं। इनमें ख्याल को राजस्थान की सर्वाधिक लोकप्रिय लोकनाट्य शैली माना जाता है, जबकि गवरी भील जनजाति का प्रमुख धार्मिक लोकनाट्य है। लोकनाट्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि लोक परंपराओं, सामाजिक मूल्यों, धार्मिक आस्थाओं और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का महत्वपूर्ण माध्यम भी है।

1. रम्मत लोक नाट्य में "लावणी" का क्या अर्थ है?
   (1) वर्षा ऋतु का वर्णन [□ L | □ R | □ M]
   (2) देवी-देवताओं की पूजा से संबंधित गीत
   (3) गणपति की वंदना
   (4) रम्मत शुरू होने से पूर्व बाबा रामदेव का भजन गाय जाता है।
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (2)

व्याख्या - रम्मत लोकनाट्य में 'लावणी' देवी-देवताओं की पूजा एवं स्तुति से संबंधित गीतों को कहा जाता है।

अतिरिक्त जानकारी

रम्मत के प्रमुख अंग (प्रसंग):-
- ❖ **चौमासा** – वर्षा ऋतु का वर्णन।
- ❖ **लावणी** – देवी-देवताओं की पूजा से संबंधित गीत।
- ❖ **गणपति वंदना** – श्री गणेश जी की वंदना।
- ❖ **रामदेव जी के भजन** – रम्मत शुरू होने से पूर्व बाबा रामदेव जी के भजन गाया जाते हैं।

2. निम्नलिखित में से किस लेखक ने "स्वतंत्र बावनी" नामक नाट्य ग्रंथ की रचना की थी ? [□ L | □ R | □ M]
   (1) मनीराम व्यास
   (2) तुलसीदास
   (3) तेजकवि
   (4) सुआ महाराज
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (3)

व्याख्या - "स्वतंत्र बावनी" के रचयिता तेजकवि थे, जिन्होंने 1943 ई. में यह कृति महात्मा गांधी को समर्पित की थी।

अतिरिक्त जानकारी

तेज कवि -
- ❖ 1943 ई. में **तेजकवि** ने "स्वतंत्र बावनी" की रचना कर इसे **महात्मा गांधी** को भेंट किया था।
- ❖ तेजकवि ने **रंगमंच (रम्मत)** को **क्रांतिकारी नेतृत्व** प्रदान किया।
- ❖ **जैसलमेर** में तेजकवि ने **रम्मतों का अखाड़ा** प्रारंभ किया।
- ❖ तेजकवि द्वारा रचित प्रमुख रम्मतें – **मूमल, जोगी भर्तृहरि, छबीली तम्बोलन** आदि।

रम्मत लोकनाट्य -
- ❖ रम्मत की **उत्पत्ति जैसलमेर** से हुई, लेकिन **बीकानेर की रम्मत प्रसिद्ध** है।
- ❖ बीकानेर में **आचार्यों की चौक** रम्मतों के लिए जानी जाती है।
- ❖ रम्मत का प्रारंभ **'फक्कड़दाता री रम्मत'** से होता है।
- ❖ रम्मत खेलने वालों को **खेलार** कहते हैं।

प्रमुख रम्मतें - पूरन भक्त , मोरध्वज , लैला-मजनूं , अमरसिंह राठौड़ री रम्मत , बारह गुवाड़ री रम्मत , रावलों की रम्मत , हिडाउमेरी की रम्मत , फागूजी री रम्मत , मनीरामजी री रम्मत , भक्त प्रह्लाद की रम्मत

3. निम्नलिखित युग्मों में से सही युग्म का चयन कीजिए – [□ L | □ R | □ M]

	(नाट्य)		(नाट्यकार)
(A)	स्वांग	–	जानकी लाल भांड
(B)	शेखावाटी ख्याल	–	नानूराम
(C)	कुचामनी ख्याल	–	लच्छीराम
(D)	तुर्रा कलंगी	–	भूरेलाल

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प का चयन कीजिए-
   (1) केवल (A) और (D)
   (2) केवल (B) और (C)
   (3) केवल (A), (B) और (C)
   (4) उपर्युक्त सभी
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (3)

व्याख्या -

(15) राजस्थान के प्रमुख संत , संप्रदाय, लोकदेवता , लोकदेवियाँ

परिचय :- राजस्थान की धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपरा संतों, संप्रदायों, लोकदेवताओं और लोकदेवियों की समृद्ध विरासत से परिपूर्ण है। यहाँ मध्यकालीन भक्ति आंदोलन, लोक आस्थाओं तथा सामाजिक सुधार आंदोलनों ने धार्मिक जीवन को नई दिशा प्रदान की। दादूदयाल, मीराबाई, पीपा, धन्ना, जाम्भोजी, जसनाथजी और रामचरणजी जैसे संतों ने भक्ति, समानता, मानवता एवं सामाजिक समरसता का संदेश दिया, जबकि रामानंदी, वल्लभ, निम्बार्क, गौड़ीय, विश्नोई, दादू, रामस्नेही एवं जसनाथी संप्रदायों ने राजस्थान की आध्यात्मिक चेतना को समृद्ध किया। दूसरी ओर गोगाजी, तेजाजी, पाबूजी, रामदेवजी, देवनारायणजी, मल्लिनाथजी एवं कल्लाजी जैसे लोकदेवताओं ने लोककल्याण, वचनपालन, गौ-रक्षा, सामाजिक न्याय और साम्प्रदायिक सद्भाव के आदर्श स्थापित किए। वहीं करणी माता, कैलादेवी, जीण माता, शिला देवी, शाकंभरी माता, नारायणी माता एवं आई माता जैसी लोकदेवियाँ शक्ति, संरक्षण, मातृत्व, लोकआस्था और क्षेत्रीय पहचान की प्रतीक रही हैं। इन संतों, संप्रदायों, लोकदेवताओं एवं लोकदेवियों ने राजस्थान की धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक मूल्यों, लोकसंस्कृति तथा सामुदायिक एकता को गहराई से प्रभावित किया है।

राजस्थान के प्रमुख संत एवं संप्रदाय

1. निम्नलिखित संतों और उनके संप्रदायों के युग्मों में से असंगत युग्म की पहचान कीजिए –

[□ L | □ R | □ M]

	(संत)	-	**(संप्रदाय)**
(A)	गरीबदास	-	रसिक
(B)	गोरखनाथ	-	नाथ
(C)	कृष्णदास जी	-	रामानंदी
(D)	बनवारी दास	-	नागा

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प का चयन कीजिए-

(1) केवल (A)
(2) केवल (A) और (C)
(3) केवल (A) और (D)
(4) केवल (B) और (D)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (3)

व्याख्या -

	संत		**संप्रदाय**
(A) ✘	गरीबदास	-	गरीबदास दादूदयाल के प्रमुख शिष्य थे तथा उनका संबंध दादूपंथ से था, रसिक संप्रदाय से नहीं।
(B) ✔	गोरखनाथ	-	गोरखनाथ नाथ संप्रदाय के प्रमुख संत एवं प्रवर्त्तक माने जाते हैं।
(C) ✔	कृष्णदास जी	-	कृष्णदास पयहारी स्वामी रामानंद की परंपरा के प्रमुख संत थे, इसलिए उनका संबंध रामानंदी संप्रदाय से है।
(D) ✘	बनवारी दास	-	बनवारी दास दादूपंथ से संबंधित थे, नागा संप्रदाय से नहीं।

अतिरिक्त जानकारी

रसिक संप्रदाय –

संस्थापक: - स्वामी रामानन्द द्वारा स्थापना।

❖ **उद्देश्य और विचारधारा:-**
- ➢ उत्तर भारत में सामाजिक, धार्मिक और भक्ति क्षेत्रों में प्रगतिशील विचारधारा का प्रचार।
- ➢ वैरागी परंपरा को "तापसी-सखा" के नाम से जाना गया।

❖ **भाषा और साहित्य:-** साहित्य मुख्यतः ब्रज भाषा में।

❖ **प्रमुख शिष्य:-**
- ➢ अनंतानंद के आठ प्रमुख शिष्यों में से – कृष्णदास पयहारी , अग्रदास, करमचंद।
- ➢ अन्य प्रसिद्ध शिष्य: किल्हणदास और अग्रदास।

❖ **विशेषताएँ:**
- ➢ किल्हणदास का झुकाव राम भक्ति के साथ योग साधना की ओर भी।
- ➢ अग्रदास ने राजस्थान के विभिन्न भागों में रसिक संप्रदाय का प्रतिपादन किया।

नागा सम्प्रदाय –

❖ **संस्थापक और पृष्ठभूमि:-**
- ➢ दादूपंथ में 'नागा' शाखा के प्रवर्तक संत सुन्दरदास जी (प्रथम) थे। कालांतर में इसी परम्परा का विस्तार करते हुए सुन्दरदास जी के शिष्य प्रह्लाददास जी ने 'घाटड़ा' में नागा सम्प्रदाय की अपनी गद्दी स्थापित की, जिन्होंने सशस्त्र साधुओं की इस शैली को संगठित कर राजस्थान की रियासतों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- ➢ उनकी पांचवीं पीढ़ी में संत हृदयराम जी महंत बने,

(16) रीति-रिवाज एवं परंपराएँ (मेले , त्योंहार, विवाह, मृत्यु, जन्म संस्कार, लोक मान्यता, शब्दावली)

परिचय : - राजस्थान की रीति-रिवाज एवं परंपराएँ उसकी लोकसंस्कृति, सामाजिक जीवन और सांस्कृतिक विरासत का आधार हैं। यहाँ के मेले, त्योहार, विवाह संस्कार, जन्म एवं मृत्यु संस्कार, लोक मान्यताएँ तथा पारंपरिक शब्दावली समाज की सामूहिक चेतना और जीवन मूल्यों को अभिव्यक्त करते हैं। "सात वार, नौ त्यौहार" की कहावत राजस्थान की उत्सवप्रिय संस्कृति को दर्शाती है, जहाँ जीवन के प्रत्येक महत्वपूर्ण अवसर को धार्मिक आस्था, लोक परंपराओं और सामुदायिक सहभागिता के साथ मनाया जाता है। राज्य के मेले और त्योहार कृषि चक्र, ऋतु परिवर्तन, लोकदेवताओं एवं धार्मिक मान्यताओं से जुड़े हुए हैं, जबकि जन्म, विवाह और मृत्यु संस्कार सामाजिक संरचना एवं पारिवारिक परंपराओं को प्रतिबिंबित करते हैं। लोक मान्यताएँ, शकुन-अपशकुन, व्रत, अनुष्ठान तथा स्थानीय शब्दावली राजस्थान की विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार राजस्थान की रीति-रिवाज एवं परंपराएँ केवल सामाजिक व्यवहार का हिस्सा नहीं, बल्कि राज्य की सांस्कृतिक निरंतरता और लोकजीवन की जीवंत अभिव्यक्ति हैं।

1. सूची- I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सही उत्तर का चयन नीचे दिए कूट से कीजिए - [□ L | □ R | □ M]

सूची-I (मेला)	सूची-II (माह)
(A) पुष्कर मेला	(i) आश्विन
(B) बेणेश्वर मेला	(ii) चैत्र
(C) दशहरा मेला	(iii) माघ
(D) शीतला माता का मेला	(iv) कार्तिक

कूट:-

	(A)	(B)	(C)	(D)
(1)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(2)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(3)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(4)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)

(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (1)

व्याख्या -

	मेला	माह
(A)	पुष्कर मेला	- कार्तिक
(B)	बेणेश्वर मेला	- माघ
(C)	दशहरा मेला	- आश्विन
(D)	शीतला माता का मेला	- चैत्र

अतिरिक्त जानकारी

राजस्थान के प्रमुख मेले –

❖ **पुष्कर मेला**
- ➢ **समय:** कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक।
- ➢ **स्थान:** पुष्कर (अजमेर)।
- ➢ **विशेषताएँ: -**
  - ■ राजस्थान का **सबसे बड़ा मेला** माना जाता है।
  - ■ विदेशी पर्यटक बड़ी संख्या में आते हैं।
  - ■ **ऊँटों की खरीद-बिक्री** के लिए प्रसिद्ध।

❖ **बेणेश्वर मेला -**
- ➢ **समय:** माघ शुक्ल एकादशी से माघ पूर्णिमा तक।
- ➢ **स्थान: डूंगरपुर**, सोम, माही और जाखम नदियों के संगम पर स्थित बेणेश्वर धाम।
- ➢ **विशेषताएँ: -**
  - ■ संत **मावजी** की तपोभूमि।
  - ■ आदिवासियों का कुंभ / भीलो का कुंभ / वागड़ का कुंभ /वागड़ का प्रयागराज / आदिवासी समाज का सबसे बड़ा मेला।
  - ■ बेणेश्वर में स्थित शिवलिंग जो पाँच तरफ़ से खंडित होने के बावजूद भी इस की पूजा की जाती हैं।

❖ **दशहरा मेला (कोटा) -**
- ➢ **समय:** आश्विन माह (विजयदशमी के अवसर पर)।
- ➢ **स्थान: कोटा**।
- ➢ **विशेषताएँ:**
  - ■ देशभर में प्रसिद्ध दशहरा उत्सव।
  - ■ **1895 ई.** में महाराव **उम्मेद सिंह** द्वारा आरंभ।

2. निम्नलिखित में से असंगत युग्म का चयन कीजिए – [□ L | □ R | □ M]

(मेला)	----------	(स्थान)
(A) श्रीमहावीरजी मेला		– चाँदन गाँव
(B) कैलादेवी का मेला		– करौली
(C) जीण माता का मेला		– देशनोक
(D) चन्द्रभागा मेला		– कोलायत

विकल्प:-

(1) केवल (B) और (C)
(2) केवल (A) और (C)
(3) केवल (C) और (D)
(4) केवल (A), (C) और (D)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

(17) आभूषण और वेशभूषा (स्त्री वस्त्र , पुरुष वस्त्र , आदिवासी वस्त्र)

परिचय :- राजस्थान की वेशभूषा और आभूषण उसकी भौगोलिक परिस्थितियों, सामाजिक परंपराओं, जातीय विविधता तथा सांस्कृतिक समृद्धि के प्रतीक हैं। यहाँ की रंग-बिरंगी वेशभूषा मरुस्थलीय जीवन की नीरसता को जीवंतता प्रदान करती है। पुरुषों की पारंपरिक वेशभूषा में धोती, अंगरखी, बंधेज या लहरिया साफा/पगड़ी तथा कमरबंद प्रमुख हैं, जबकि महिलाओं की वेशभूषा में घाघरा, कांचली, कुर्ती और ओढ़नी विशेष महत्व रखती है। राजस्थान की विभिन्न जनजातियाँ, जैसे भील, गरासिया, सहरिया एवं मीणा, अपनी विशिष्ट वेशभूषा और अलंकरण शैली के लिए जानी जाती हैं। आभूषणों में बोरला, नथ, बाजूबंद, हंसली, कंठी, चूड़ा, पायजेब एवं कड़े विशेष रूप से लोकप्रिय हैं, जो केवल सौंदर्य का साधन नहीं बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा, वैवाहिक स्थिति और सांस्कृतिक पहचान के भी प्रतीक हैं। क्षेत्र, जाति और अवसर के अनुसार वेशभूषा एवं आभूषणों में विविधता देखने को मिलती है, जो राजस्थान की लोकसंस्कृति को विशिष्ट और आकर्षक बनाती है।

1. राजस्थानी परिधानों के बारे में अधोलिखित कथनों पर विचार कीजिए – [□ L | □ R | □ M]

(A) कृषक वर्ग आटे वाली पगड़ी तथा सामंत मोटी पट्टेदार पगड़ी का प्रयोग करते थे।
(B) कुर्ती के नीचे कांचली अर्थात् बाँह वाली अंगिया पहनी जाती थी।
(C) जनपद काल में ही राजस्थान में सूती वस्त्रों का चलन प्रारंभ हुआ।
(D) शरद ऋतु में कंधों पर खेस, पामड़ी डाल लिये जाते थे।

नीचे दिए गए विकल्पों में से कौन-सा/से कथन असत्य है/हैं?

(1) केवल (A)
(2) केवल (C)
(3) केवल (A) और (C)
(4) इनमे से कोई नहीं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर - (3)

व्याख्या -

(A) ✘	आटे वाली पगड़ी कृषक वर्ग नहीं, बल्कि सुनार पहनते थे तथा मोटी पट्टेदार पगड़ी सामंत नहीं, बल्कि बंजारे धारण करते थे।
(B) ✔	राजस्थानी महिलाओं द्वारा कुर्ती के नीचे कांचली अर्थात् बाँह वाली अंगिया पहनी जाती थी।
(C) ✘	राजस्थान में सूती वस्त्रों का प्रचलन जनपद काल में नहीं, बल्कि कालीबंगा एवं आहड़ सभ्यता के समय से ही था।
(D) ✔	शरद ऋतु में लोग कंधों पर खेस एवं पामड़ी ओढ़ते थे।

अतिरिक्त जानकारी

राजस्थान की पगड़ी और वस्त्र परंपरा -

पगड़ी (गौरव और प्रतिष्ठा का प्रतीक) -

- ❖ पगड़ी को राजस्थान में **गौरव और प्रतिष्ठा का सूचक** माना जाता है।
- ❖ **सुनार** – आटे वाली पगड़ी पहनते थे।
- ❖ **बंजारे** – मोटी पट्टेदार पगड़ी पहनते थे।
- ❖ **विशेषता** : विभिन्न पेशों और वर्गों के अनुसार **पगड़ी के पेच, आकार और रंग** अलग-अलग होते थे।

पगड़ी के प्रमुख प्रकार : -

- ❖ **लहरिया की पगड़ी** – तीज के अवसर पर।
- ❖ **मदील पगड़ी** – दशहरे पर।
- ❖ **मोठड़े की पगड़ी** – विवाहोत्सव पर।
- ❖ **राजशाही पगड़ी** – जयपुर में प्रचलित; लाल रंग की लहरियों वाली, केवल राजाओं के लिए।

सूती वस्त्र परंपरा -

- ❖ राजस्थान में सूती वस्त्रों का चलन **कालीबंगा और आहड़ सभ्यता** से ही था।
- ❖ उत्खनन में प्राप्त : **रूई कातने के चक्र , तकली**
- ❖ यह प्रमाण है कि उस समय के लोग **सूती धागा और वस्त्र** प्रयोग करते थे।

2. निम्नलिखित में से सही युग्म का चयन कीजिए – [□ L | □ R | □ M]

(A) साड़ी - चोल, निचोल, पट, दुकूल, अंसुक, वसन
(B) अंगरखी - गाबा, गदर, मिरजाई, डोढी, कानो, डगला
(C) पगड़ी - समुद्र लहर, मलमल, मखमल, पारचा, मसरू, चिक, इलायची
(D) ओढ़नी - पोमचा, लहरिया, लुगड़ी

विकल्प: -